22 July - 20
Wed

Rural Sociology, BA-(H) समाजशास्त्र प्रतिष्ठा
ग्रामीण समाजशास्त्र Paper VI

From-
Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram

प्रभु जाति

[Dominant- caste]

- ग्रामीण भारत मे सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार जाति प्रथा है जहाँ विभिन्न जातियाँ जजमानी प्रथा द्वारा आर्थिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर रही है। निम्न और उच्च जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध भू-स्वामी और काश्तकार मालिक और सेवक, साहूकार और ऋण लेने वाले - आदि के रूप मे भी पाये जाते है। जातियो के पारस्परिक सम्बन्धो ग्रामीण एकता या ग्रामीण सामाजिक संरचना को समझने के लिए प्रभु जाति का - अवधारणा को स्पष्ट करना आवश्यक है।

→ सन् 1959 मे प्रो० श्रीनिवास ने मैसूर के रामपुरा गाँव के अध्ययन के दौरान प्रभु जाति की अवधारणा को विकसित किया। इस अवधारणा का प्रयोग विभिन्न विद्वानो ने अपने अध्ययन - मे किया है और इसके सहारे उन्हे गाँव के राजनैतिक संगठन अन्तर्जातीय संघर्ष तथा सम्बन्ध एवं प्रभुत्व को समझने मे सहायता मिली है। डॉ दुबे और मजूमदार ने इस अवधारणा का प्रयोग कर उसकी उपादेयता का परीक्षण किया है वस्तुतः भारत के ग्रामीण जीवन मे आज जो नवीन संरचनात्मक प्रतिमान विकसित हुए है उन्हे प्रभु जाति की अवधारणा के आधार पर - समझा जा सकता है।

→ प्रो० श्रीनिवास ने लिखा है कि - एक जाति को प्रभु जाति तब कहा जाता है जब वह संख्यात्मक आधार पर किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र मे शक्तिशाली हो तथा आर्थिक - एवं राजनैतिक रूप से अपने प्रभाव का प्रबल रूप से - प्रयोग करती हो. यह आवश्यक नही है कि परम्परागत जातीय संस्तरण मे वह सर्वोच्च जाति के रूप मे ही हो।"

→ इसका तात्पर्य है कि किसी जाति को प्रभु जाति अथवा प्रबल जाति केवल तभी कहा जाता है जब उसके सदस्य संख्या मे इतने अधिक हो कि वे - गाँव के अन्य जातियो पर अपना प्रभुत्व रख सकते हो तथा एक प्रभावशाली आर्थिक और राजनैतिक इकाई के रूप मे कार्य कर सकते हो। यदि ऐसे बड़े और - शक्तिशाली जाति समूह का स्थान सम्पूर्ण जाति-व्यवस्था

Scanned by TapScanner

में बहुत निम्न नहीं होता तो वह सरलता से एक प्रबल अथवा प्रभु जाति के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

प्रभु जाति की विशेषताएँ →

(1) जनसंख्यात्मक शक्ति – जाति का सर्वप्रथम आधार उसकी संख्यात्मक शक्ति है। गाँव में जिस जाति समूह को समर्थन प्रदान करने वाले व्यक्ति अधिक संख्या में होते हैं उसका स्वाभाविक रूप से अन्य जातियों पर प्रभुत्व स्थापित होने लगता है।

(2) जातीय संस्तरण में उच्च स्थिति – डॉ श्रीनिवास के अनुसार प्रभु जाति कहलाने वाली जाति के लिए यह आवश्यक है कि उस जाति की जातीय संस्तरण में भी उच्च स्थान हो।

(3) भू-स्वामित्व – श्रीनिवास के अनुसार किसी भी गाँव अथवा क्षेत्र में केवल वही जाति समूह प्रभु जाति बन पाती है जिसके पास गाँव की कृषि योग्य भूमि के एक बड़े भाग पर स्वामित्व हो।

(4) प्रशासनिक स्थिति – यह देखा गया है कि गाँव में जिस जाति के अधिक सदस्य विभिन्न श्रेणियों की प्रशासनिक सेवाएं प्राप्त हैं वही जाति कुछ समय बाद प्रभु जाति बन जाती है।

(5) राजनैतिक प्रभुत्व – किसी विशेष क्षेत्र में जिस जाति के सदस्यों की संख्या जितनी अधिक होती है आज भारत के प्रत्येक भाग में वे जातियां ही प्रभु जातियों के रूप में पाई जाती हैं जिसके पास राजनैतिक सत्ता को प्रभावित करने की शक्ति है।

(6) आधुनिक शिक्षा – शिक्षा को भी प्रभु जाति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण तत्व स्वीकार किया जाता है, गाँव में आज जिस जाति के अधिक सदस्यों ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके सरकारी नौकरी में अधिक स्थान प्राप्त कर लिया है उनका अन्य जातियों पर प्रभुत्व स्थापित हो जाता है।

(7) आर्थिक सम्पन्नता – आर्थिक सम्पन्नता का निर्धारण केवल भू स्वामित्व के आधार पर होता था लेकिन आज अधिक भूमि का स्वामी होना ही किसी व्यक्ति अथवा जाति की श्रेष्ठता की कसौटी नहीं है।

(8) विकास योजनाओं से लाभ की सीमा – ग्रामीण विकास के वर्तमान युग में वे जातियां प्रभु जातियों के रूप में परिवर्तित हो गई हैं जिन्होंने विभिन्न विकास योजनाओं तथा मुख्य रूप से सामुदायिक विकास योजनाओं के अधिकाधिक लाभ प्राप्त किए हैं।

(9) सम्पूर्ण गाँव की एकता न्याय और कल्याण के लिए कार्य – प्रभु जाति गाँव की एकता को बनाये रखने में योग देती है और ऐसे कार्य करती है जिससे सारे समुदाय की भलाई हो।

→ अतः ग्रामीण भारत में जाति व्यवस्था जाति पंचायतें स्वयं प्रभु जाति आज प्रमुख संस्थाएं हैं और जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का भी एक प्रमुख आधार है। अपनी परम्परागत विशेषताओं के कारण जाति व्यवस्था ग्रामीण जीवन की निरन्तरता बनाए हुए है। जबकि आज इसकी संरचना और प्रकार्यों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। बावजूद इसके भारतीय गाँवों में जाति व्यवस्था जाति पंचायतें एवं प्रभु जाति की भूमिका तथा ग्रामीण सामाजिक संरचना को कायम रखने में इसका योगदान महत्वपूर्ण है।

From –
(Dr Arun Kumar)
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College Sasaram

22 July – 20

Scanned by TapScanner